४७: मानव परम्परा

दिनांक -६/१/२०१२

सह-अस्तित्व सहज प्रमाण परम्परा ही मानव परम्परा है | सह-अस्तित्व अपने में व्यापक वस्तु रुपी सत्ता में सम्पृक्त जड़,चैतन्य प्रकृति ही है | यही परम सत्य के रूप में पहचाना गया है | ऐसे सत्य के आधार पर ही समाधान, समाधान के अर्थ में न्याय, न्याय के अर्थ में नियम, नियम के अर्थ में आचरण होना देखा गया, समझा गया, जीकर प्रमाणित किया गया |

मानव आदि काल से शुभ चाहता ही है, चाहे व्यक्तिवाद हो, चाहे समुदायवाद हो | शुभ के अर्थ में ही समुदायवाद को माना गया है | शुभ के अर्थ में ही व्यक्तिवाद को माना गया है | इस विधि से आदिकाल से अत्याधुनिक काल तक अथवा आधुनिक युग तक मानव शुभ को चाहा है | शुभ को चाहने के क्रम में व्यक्तिवाद, समुदायवाद पनपा है | विभिन्न देश काल में, विभिन्न देशों में, भिन्न परिस्थितियों में मानव ने व्यक्तिवाद, समुदायवाद को स्वीकारा है | इसका मूल कारण जंगल युग, पत्थर युग, धातु युग, बारूद युग में भी यही व्यक्तिवाद, समुदायवाद प्रभावशील रहा | इसका शुरुआत व्यक्तिवाद से रहा | इसका आधार में व्यक्तिवाद तक रूप और बल रहा | समुदायवाद आते तक धातु युग, बारूद युग की शुरुआत हुई, जिसमे धन भी समाहित हुआ | इस ढंग से मानव विकसित होता हुआ मानते हुए व्यक्तिवाद, समुदायवाद से आगे सोच नहीं पाया | यह विकल्प विधि से समझ में आने से मानव सहज अध्ययन के लिये अर्पित है | अध्ययन विधि से सोचने के तरीके को नाम दिया है अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित चिंतन | इसका स्पष्टीकरण का नाम दिया है, व शास्त्र | इसके चिंतन के मूल में मुख्य बात सहअस्तित्व ही रहा | सहअस्तित्व में अनुभव ही प्रमाण रूप में प्रस्तुत होना देखा गया है |

मानव में नियति सहज विधि से अर्थात सह-अस्तित्व सहज विधि से कार्य, व्यवहार, विचार, अनुभवमूलक पद्धति से व्यक्त होने का अधिकार हर मानव में, से, के लिये सुलभ है | इसी आधार पर अध्ययन विधि से लोकव्यापीकरण पूर्वक मानव कुल सहज रूप में सार्थक होने के आधार पर यह प्रस्ताव प्रस्तुत है | मेरे अनुसार मानव शुभ चाहने के कारण शुभ रूप में जीने का इच्छुक है | इसी को शुभेच्छा नाम दिया है | सत्य अपने स्वरूप में शुभ का आधार है | सत्य ही सहअस्तित्व रूप में प्रस्तुत है, दूसरी भाषा में नित्य वर्तमान है, तीसरी भाषा में नत्य सुलभ है | नित्य सुलभ का अर्थ यही है कि सर्व देशकाल में सर्वमानव में, से, के लिये अध्ययन सुलभ है | इस क्रम में मानव इस प्रस्तुति का अध्ययन करेगा | सार्थकता समझ में आने पर जीकर प्रमाणित करेगा | इसी आधार पर सम्पूर्ण वांगमय प्रस्तुत हुआ है | इसके मूल में अर्थ प्राप्ति का कोई आधार नहीं है | इसी दावे के साथ इस प्रकार कह रहा हूँ कि साधना, समाधि, संयम में प्राप्त सह-अस्तित्ववादी विचार, व्यवस्था को अर्थात विकासक्रम-विकास, जागृति क्रम- जागृति के अध्ययन करने, प्रस्तुत करने का अधिकार तीस वर्ष की अवधि में सम्पन्न हुई | तीस वर्ष की समाप्ति के बाद हम साधना में लगे | जो मुझे तीस वर्ष के बाद मिला, उसे मानव सम्मुख विधिवत प्रस्तुत करने में तीस वर्ष लगे |

आज तिथि छः जनवरी सन दो हजार बारह (०६/०१/२०१२) दिन शुक्रवार तक नब्बे वर्ष को हम पार कर चुका हूँ, क्योंकि हमारा शरीर का जन्म अथवा शरीर का प्रकटन १४ जनवरी १९२० को सम्पन्न हुआ था | ऐसा हमारे बड़े बुजुर्ग कहे हैं, उसे मानकर मैं चल रहा हूँ | इस क्रम में तीस वर्ष तक आजीविका का कार्य किया, उसमें से १० वर्ष बचपन में चले गये | बीस वर्ष का हमारा कार्य, व्यवहार के मध्य बाइसवें वर्ष में शादी हुई | हमारी धर्म पत्नी के साथ उनका अभिभावक हम दस वर्ष रहे |

बाकी सभी समय मेरी श्रीमती नागरत्ना जी मेरा अभिभावक रही हमारा साठ वर्ष के आयु तक | साठ वर्ष आयु के बाद कृषि कार्य करना शुरू किया, गौशाला रख लिया | अस्सी वर्ष के आयु तक हमने गोशाला एवं कृषि कार्य किया, अर्थात २० वर्ष यह कार्य किया | इस ढंग से हमारा समृद्धि पूर्वक जीने का अधिकार बन गया | इसी आधार पर अपने दर्शनों में लिखा हूँ कि समझदारी से समाधान, श्रम से समृद्धि होना हर व्यक्ति, परिवार का होना बताया गया है | समाधान, समृद्धि के बिना नर-नारी में समानता, गरीबी-अमीरी में संतुलन हो नहीं पाता | श्रमशीलता सभी वर्ग, समुदाय, व्यक्ति कहलाने वालों को स्वीकारना ही पड़ेगा तभी हम अभयतापूर्वक जीने के पात्र होंगे क्योंकि जंगल युग से चले आया मानव में प्राकृतिक भय, जीव भय नगण्य हो गये हैं | किन्तु मानव में निहित अमानवीयता का भय प्रबल होता ही आया है | अभी मानव अभयता पूर्वक जीने के स्वरूप में, वर्तमान में विश्वास होना ही प्रधान है | वर्तमान में विश्वास होना ही मानव जाति एक, मानव धर्म एक होने का प्रमाण है | इसे जब तक मानव परम्परा परम्परा स्वीकारता नहीं है तब तक अभयतापूर्वक जीना सम्भव नहीं है |

धरती पर हर देश काल में मानव अभयतापूर्वक जीना ही चाहता है | इसके प्रमाण में सर्व देश काल में समुदायवाद, व्यक्तिवाद में जीता हुआ मानव सुविधा, संग्रह, भय, प्रलोभन में संग्रह विधि को अपनाया है | संग्रह विधि से कहीं शांतिपूर्वक जीना, वर्तमान में विश्वासपूर्वक जीना सम्भव नहीं हो पाया है | कुछ समय तक घटना घटित होना, कुछ समय नहीं होना यह देखने को मिलता है | इस कारण सामरिक तन्त्र का परित्याग हो गया ऐसा नहीं हुआ | जब सामरिक प्रक्रिया नहीं होता तब सामरिक प्रक्रिया के लिये कार्य चलता ही रहता है | इस गवाही से हम यह मान सकते हैं कि मानव जाति भय मुक्त नहीं हुआ | जबकि हर नर-नारी अथवा हर मानव समुदाय भय से मुक्त होना चाहता है | जीने में प्रमाणित होना चाहता है व भय मुक्त होना चाहता है | जीने में ही इसका प्रमाण है | केवल सामरिकतावादी प्रवृत्तियों से मुक्त होना, अपराधिक लोगों से, यांत्रिकता से मुक्ति पाना, ऐसा घटित होने के लिये मानव जात समझदार होना पड़ेगा, दूसरा कोई रास्ता नहीं है |

व्यक्तिवादी समझ, समुदायवादी समझ यह दोनों मानव जाति समान, मानव धर्म समान, मानव परम्परा समान के रूप में प्रतिष्ठित नहीं हो पाया | इसी परिस्थितिवश सर्व देश काल में मानव शिक्षा विधि से लाभोन्माद, कामोन्माद, भोगोन्माद के रूप में फंस गया | राष्ट्रीय योजनानुसार अनेक समुदाय रुपी कार्यक्रम के आधार पर सामरिक स्वीकृति के लिये बाध्य हो चुके हैं | पड़ोसी देशों के साथ युद्ध करना अथवा युद्ध का तैयारी करना, इसमें हम सब सहमत हो चुके हैं | इस तथ्य को समझने पर, हम चाहते क्या हैं? करते क्या हैं? होता क्या है? स्पष्ट होता है | मूल रूप में हर समुदाय शुभ चाहता है | करने की जगह पर अशुभ घटित करता है | परिणाम अशुभ होता है | इस क्रम में मानव अपने मानसिकता में अथवा स्वीकृतियों में शुभ को प्रमाणित करने में असफल हो गये | यही दीनता, हीनता, क्रूरता का आधार हुआ | इसी में कोई आदमी अधिक क्रूर होता है, कोई नहीं होता है जो कि अपने को दुर्बल मानता है | इस प्रकार प्रपंचपूर्वक जीने को, मजबूरी में जीना नाम दिया है | इससे मुक्ति हेतु विकसित चेतना प्रस्तावित है जिसके आधार पर जीने पर मानव परम्परा होना सहज है |

सर्वशुभ हो! जय हो ! मंगल हो! कल्याण हो!

- ए. नागराज | प्रणेता एवं लेखक - मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद) | भजनाश्रम, अमरकंटक, जिला-अनूपपुर (म. प्र.)